Subject: Sociology
Class: B.A.
Year: 3rd SEM
Name of The Paper: Social Change and Social Movement in India
Topic: Women's movement

Ms Shashi Prabha Gautam
Assistant professor – sociology
Government degree college jakhini, varanasi
Email- shashi.socio@gmail.com

महिला आंदोलन

महिला आंदोलन समाजिक आंदोलन का एक महत्वपूर्ण प्रकार इस दृष्टि से है कि इसका उद्देश्य इन संस्थागत प्रबंधों, मूल्यों, रीति-रिवाजों और समाज की आस्थाओं में परिवर्तन लाना है जिन्होंने वर्षों से महिलाओं को पराधीन कर रखा है।

1950 के दशक की शुरुआत में हिंदू विवाह अधिनियम, हिंदू उत्तराधिकार अधिनियम, दहेज निषेध अधिनियम और समान पारिश्रमिक अधिनियम जैसे कानूनों की एक श्रृंखला पारित की गई थी। वर्ष **1975 से 1985 के दशक में** स्वायत्त महिला आंदोलनों का उदय हुआ।

महिला आंदोलन के प्रमुख मुद्दे क्या हैं?

आज के समय महिला आंदोलन के मुख्य मुद्दे हैं-

1-**महिलाओं पर हिंसा को रोकना,**

2- निजी कानूनों में संशोधन,

3-महिला स्वास्थ्य,

4-आर्थिक दशा में सुधार इत्यादि ।

भारत में महिला आंदोलन अलग-अलग दौर व पड़ावों से गुज़र कर अपना अस्तित्व जमाए हुए है।

औपनिवेशिक काल के दौरान

- स्वदेशी आंदोलनों के दौरान सभाओं की व्यवस्था की गई और खादी कताई महिलाओं द्वारा की गई। रवींद्रनाथ टैगोर की बहन स्वर्ण कुमारी और उनकी बेटी सरला देवी स्वदेशी आंदोलनों की प्रबल समर्थक थीं।
- भारतीय राष्ट्रीय आंदोलनों के इतिहास में 1911-18 की अवधि का बहुत महत्त्व है
- भारत में महिला आंदोलनों की महत्त्वपूर्ण उपलब्धि महिला भारतीय संघ (WIA) की स्थापना थी जो मुख्य रूप से महिलाओं के मताधिकार, शैक्षिक और सामाजिक सुधार के मुद्दों पर सरकार की नीति को प्रभावित करने से संबंधित थी।
- 1919 में रॉलेट एक्ट के खिलाफ गांधी ने एक अखिल भारतीय सत्याग्रह शुरू किया। महिलाओं ने जुलूस निकाला और खादी के इस्तेमाल का प्रचार किया जिसके कारण वो जेल भी गई।
- मताधिकार के लिये संघर्ष के बाद पहली बार भारतीय महिलाओं ने 1926 के चुनावों में अपने वोट का प्रयोग किया।
- सरोजिनी नायडू सहित बड़ी संख्या में महिलाओं ने दांडी मार्च में सक्रिय रूप से भाग लिया। वर्ष 1931 में सरोजिनी नायडू ने भारत की महिलाओं के आधिकारिक प्रतिनिधि के रूप में दूसरे गोलमेज सम्मेलन में भाग लिया।
- वर्ष 1930 के सविनय अवज्ञा आंदोलनों के दौरान, कमला देवी चट्टोपाध्याय ने सभाओं को संबोधित किया और विदेशी कपड़े और शराब की दुकानों पर धरना दिया।
- सुभाष चंद्र बोस की भारतीय राष्ट्रीय सेना में रानी झांसी रेजिमेंट महिलाओं के लिये बनाई गई थी।

उत्तर-औपनिवेशिक काल के दौरान

- तेलंगाना आंदोलनों (1946-51) उन लोगों का विरोध था जो हैदराबाद राज्य में निजाम, पाटिल और जागीरदारों के दमनकारी शासन से भोजन और स्वतंत्रता दोनों चाहते थे। आंदोलनों में सक्रिय भाग लेने वाली कुछ महिलाओं में दुबाला सलाम्मा, चित्याला ऐलम्मा, पेसारू सतबम्मा आदि शामिल थीं।
- चिपको आंदोलन का जन्म उत्तर प्रदेश के टिहरी गढ़वाल ज़िले के आडवाणी (Advani) में हुआ था। गौरा देवी ने 2,415 पेड़ों को काटने के लिये ठेकेदारों और वन विभाग के कर्मियों को रेनी वन में प्रवेश करने से रोकने के लिये 27 गाँव की महिलाओं का नेतृत्व किया।
- आंध्र प्रदेश में महिलाओं के क्रैक विरोधी आंदोलनों, आंध्र प्रदेश में आसुत शराब के सेवन और बिक्री पर प्रतिबंध लगाने में महिलाओं ने ऐतिहासिक भूमिका निभाई है।

1970 के दशक से

- स्वतंत्रता के बाद की अवधि में महिला आंदोलनों ने खुद को दहेज, मूल्य वृद्धि, भूमि अधिकार, महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी, दलित हाशिए पर महिलाओं के अधिकार, बढ़ते कट्टरवाद, मीडिया में महिलाओं के प्रतिनिधित्व जैसे आदि बड़ी संख्या में मुद्दों को संबोधित किया है। यह तीन प्रमुख मुद्दों बालिका, लैंगिक हिंसा और वैश्वीकरण के इर्द-गिर्द बड़ी संख्या में महिलाओं को आकर्षित करने में भी सक्षम रहा है।
- संविधान का अनुच्छेद 15 और अनुच्छेद 16 (2) भेदभाव को रोकता है और कानून (अनुच्छेद 14) की नजर में सभी को समान मानता है। 1950 के दशक की शुरुआत में हिंदू विवाह अधिनियम, हिंदू उत्तराधिकार अधिनियम, दहेज निषेध अधिनियम और समान पारिश्रमिक अधिनियम जैसे कानूनों की एक श्रृंखला पारित की गई थी।
- वर्ष 1975 से 1985 के दशक में स्वायत्त महिला आंदोलनों का उदय हुआ। वर्ष 1975 को अंतर्राष्ट्रीय महिला वर्ष (IWY) के रूप में घोषित किया गया था जिसे बाद में एक दशक तक बढ़ा दिया गया था।
- कुपोषण के कारण पुरुषों की तुलना में महिलाओं में मृत्यु दर अधिक है। महिलाओं के खिलाफ हिंसा, दहेज हत्या, पत्नी को पीटने, जाति और सांप्रदायिक दंगों के दौरान सामूहिक बलात्कार, सामूहिक बलात्कार, महिलाओं के यौन उत्पीड़न और मीडिया में महिलाओं के रूढ़िबद्ध प्रतिनिधित्व के रूप में प्रकट होती है। इनके साथ ही गरीबी और अभाव दलित और आदिवासी महिलाओं की स्थिति को प्रभावित करते हैं, जिनमें से कई वेश्यावृत्ति के लिये मजबूर हैं।